

कार

मा

प्रभ

म० वि (वि०) ॥

२९५ विश्वदेव होमोपनिषद्

ASHA ARCHIVES 3465

॥ का वसिष्ठ स्नानवाग्नि ॥ रुवतु ॥ ॥ गतस्मि
द्रुतिः ॥ भक्ति क० पुष्टि क० यव क० न्यादि० यस्तु
॥ विप्रिवयस्तु सुप्राययत ॥ ॥ ॐ सि वि (अथ देवता)

पुनर्भक्ति
येह्याहोम
कालदधन
यव, गुन, ग्व
पक्षा, होम,
याहा, लि, वाला
घाकि जाकि
श्रवामार्ग,
वलागत, हीजा
इह, सुगन्ध,
कसुव, धल,
पञ्चगव्य,

१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
अथविष्णुपदवहामविधि
॥ चूलिकाश्रीवा ॥ आभक्ति
काक्षययथाविधिन
श्रिकायैक्यार्थ ॥ अथा
दि ॥ अमूकगणगामूक
नामादिर्विष्णुपदवहामवि
धिवदवयवनिमित्तक
कुं ॥ अथाय अथानि
मः ॥ ॐ अकृष्ण ॥ गायत्री
न्यास ॥ अथयानुष्टुप
॥ आत्मयुजा ॥ गायत्रीम
नुष्टुपकुलुनित्रीकृष्ण ॥
ॐ यद्वदवा ॥ कुलन
समाकृष्ण ॥ ॐ मानस
क ॥ लयन ॥ ॐ लीवृक
र्षी ॥ अथकृष्ण ॥ ॐ वला
यासि ॥ युजन ॥ ॐ गय
आर्क्षन ॥ कृष्णनिध
य ॥ ॐ अथलैजसमी ॥
समिधनिधाय ॥ ॐ सद
सह्यति ॥ धर्मनिधाय

॥ ॐ वीरुयथम ॥ वी
हिविक्रपम ॥ ॐ दव
स्यत्वा ॥ अथकृष्ण ॥
ॐ दि नलममह ॥ विदु
नासनी ॥ ॐ यथा नि
य ॥ यमनिश्चय ॥
ॐ तजासि ॥ वृतास
नी ॥ ॐ दि नलमवर्ण
॥ लक्ष्मीयुजन ॥ ॐ
व्यावृक्षी ॥ काष्ठ
निधाय ॥ ॐ ॐ न्धम
नास्या ॥ ॐ ॐ न्धनीजा
कयन ॥ ॐ सगवस्तु
॥ कुलुयुजन ॥ ॐ
अग्निमूर्धा ॥ अ
ग्निमानिय ॥ ॐ कृष्ण
दमग्नि ॥ कृष्णयुजा
लयन ॥ उचस्य
नी ॥ अथयानुष्टुप
नथाकृष्ण ॥ ॐ अग्नि
र्षी ॥ अनलवृय ॥

ॐ अन्त्र मि नृ व सा ॥
 अग्नि पु द कि ली ॥ अ
 धा का य अग्नि स्का
 व न सु सु क र्त्त म
 मु ॥ ॐ म यि गृ द्वा ॥
 अग्नि स्का य न ॥ स्व
 सि वा च न य १० न ॥
 ॥ ॐ म मालि न ॥ ॐ न्ध
 न न पु का य ॥ ॐ ए अ
 दि वि ॥ अग्नि क ली ॥ व
 दि अग्नि न ॥ अग्नि दा
 य न म ॥ य इ व दा य
 २ ॥ सा म व दा य २ ॥ अ
 ध व दा य १ ॥ अग्नि ॐ
 दा दि १० ॥ वि १० द वा
 ग्रे न म ॥ अग्नि मि ध
 दा म ॥ नृ क ॐ का न
 ल स्वा हा ॥ नृ क नृ क
 इ द्वा न ॥ इ द्वा न
 ए का य ए वा ॥ ॐ न
 वा द द व ॥ अग्नि ह

मू र्वी क न ली ॥ ॥ म
 ध क लु पु डा ॥ ॐ कः
 या न वि गु ॥ न सा यु
 न पा नु पु न व र्त्त ली ॥ ॐ
 प्र लु ० न द ॥ क
 ० न र्त्त मा क र्त्त न ॥ वा
 नु ए न नि धाय ॥ ॐ
 म ह्री ना य सा सि ॥ वृ
 न द य ॥ ॐ न्ध वा क
 र्त्त ॥ ए ज न ॥ ॐ न
 आ सि ॥ वृ ना व ला क
 र्त्त ॥ अग्नि का य मि
 ति ॥ वृ ना द्वा मि ॥ ॐ
 स क न अग्नि ॥ वृ का
 वि क नृ द व द ॥
 अग्नि ना म ॥ या व का
 ग्रे स्वा हा ॥ ग न य मि
 इ म्म दि स्व स्व म नृ क
 वृ ना द्वा मि द या न ॥
 वृ ना द्वा मि द्वा १० ॥
 ॐ स क न अग्नि ॥ ॥
 इ द्वा ना नु पु न व र्त्त ली ॥

ॐ पु सु क ० न क ॥ यवा
क न तिलादि या नु निष्ठा
य ॥ अर्थ या भा द क नाः
सु क ० ॥ अ मि रं जा क
हा न काय ये धा दा स्यः
माना ० द म न र्म क स्य
सिद्धि न म् ॥ तिला द्वा नि
द द्या त् ॥ ग म य नु उ य त
३ ॥ व क्क ० ॥ स्वा हा ॥ विष्णु
नू द व द ५ ॥ ० ॥ द्या दि १०
आ दि त्या दि १० ॥ अ ० ५
का मा दि २ ॥ मा मा य ॥
य का य ति थि ने क गु
था ग क न ल मू क क
अ थि ती र्थ वा क्का ० ५
दि ८ अ सि ना नी दि ८ ॥
स ग ल य त्रि वा न य स्वा
हा ॥ र्म स्वा क ति ॥ वा क्क
ति १० ॥ ॐ अ र्म स्वा ता ॥ न
भा द ॥ वी म् क च नू गृही
त्वा ॥ अ र्जु न ह्मा म य त ॥
ॐ द व क्क न स्ये न भा व अ
ऊ न म सि स्वा हा ॥ ॐ ० द

म ० ॥ त्या ग ॥ ॐ म नू ष्य क
न स्ये न भा व य ऊ न म सि
स्वा हा ॥ ० द म ० ॥ त्या ग ॥
ॐ वि ह क्क न स्ये न भा व
य ऊ न म सि स्वा हा ॥ ०
द म ० ॥ त्या ग ॥ ॐ आ र्म
क न स्ये न भा व य ऊ न
म सि स्वा हा ॥ ० द म ० ॥
त्या ग ॥ ॐ म स्ये न स न न
भा व य ऊ न म सि स्वा हा
॥ ० द ॥ ॐ य वा द म भा
वि र्म ० ५ का न य वा विः
दी र्म स्य सर्व स्ये न भा व
य ऊ न म सि स्वा हा ॥ ०
द म ० ॥ त्या ग ॥ ॥
त भा द्वा ना क ति ॥ ॐ वि
ह स्य ० ५ स्व भ यि स्य ० ॥
॥ ॥ त भा यून न क चः
नू ० ५ का क व लि पु दा
न ॥ अ स न ॥ का क व
लि यि नू स न उ सि क
ता ॥ वि लु म क्क ॥ य भा
सि य म द्वा सि वा य

भासिमहामुनः। सयः
 जन्मकृत्तवायवलिगु
 द्गन्तुवायसा॥ अमक
 ग्मगुवाक्का नाभका
 ककलिविलुडवनिष्ठ
 ना॥ ॥ तिलादक॥ ॥ न्द
 वात्रुवायुवा याम्ना
 नेअस्यमागुया॥ वाय
 सायुतिगु द्गन्तु ॥ ॥
 यिलुमयागुर्त॥ काक
 वलियिलु तिलादकैउ
 यनिष्ठना॥ चन्दन, य
 ध्या, धूप, दीप, इल॥
 मुनि॥ ॥ न्दवात्रुवा
 युवा, याम्ना नेअस्यः
 मागुया॥ भकाका॥ ॥
 तिगु द्गन्तु, काकवल
 नभा मुनः॥ अगुगन्ध
 दि॥ ॥ अर्घ्ययागुद
 कनउवस्यर्गनी॥ ॥
 निकादुति॥ १०॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ यष्टिकादुति॥ १०

॥ॐ शुभं कय जामह ॥ य
वधनादि ॥ ॥ शुभं
रुवि १० ॥ वाक् ॥ ॐ शुभं
दक्षिणाय न सु शुभं
यूननाय न ॥ वधं वधि
कीना वहा ॥ ॐ शुभं ०
॥ नकुशा स्वाहा ॥ ॥ शु
संसा ॥ ॐ शुभं ॥ यथ
॥ माद्विनाथ ॥ मः
लं कृत्वा ॥ ॐ शुभं दाय
स्यया दाय नं यनय
देताम वदा ॥ थदमं
नुकाथ वीद्विती यं
तयथ वदनं वाहः
नीवक्र धारवी मयः
नीयस्य मगुनयन
मयति वक्रागुमः
वदं द्वावि मयुचन
मर्हि सुव युतिवद
नय नूया वनाद
॥ शुभं मन्त्राथ मन्त्र
वि ॥ यथ वा विमि

श्री गणेशाय नमः ॥ वा
 क ॥ विष्णुदत्तवाग्भिर्यु
 क्तनिमित्तार्थयथाऽह
 म्ना कुरुत प्रदायिना
 रवन्तु ॥ कालवर्षगुः
 यर्ज्ञान्यष्टयिवीसस्य
 आलिनी ॥ दत्तात्रेयका
 रुवदिना वा कुरुत
 नु निरुया ॥ अक्षानाः
 क्षानभावा कृतमकृतं
 च कर्तव्यं कर्तव्यं च निः
 तिकं मूढा यूजा विधा
 नं कर्म यजनधोक्ता
 मुमन्तु न मरु ॥ यथः
 यरुष्टाष्टाद्विनवि
 नरुगं सर्वलाके कना
 र्थ ॥ सर्वसम्यक्मनुः
 कालनरुगवद्व्या
 लिष्टुप्रसन्न ॥ दाधन
 वाक्कनवरुकि रावा
 चापल्यदाष्टामूनयः
 पुरावा ॥ नृनाधिकं म

नु कृयाध्वं न कर्मस्य
 ध्वं वा मम दातुं नृणां॥
 त्वं गतिं सर्वं हृता नो द
 द्वा मर्त्यं यत्र भव्यं न क
 र्म नमनसा वाचा न
 भा न्यायादिक मर्त्या॥
 जय ह्यंता च हीन नु
 तनु यत्र नृणां स न॥ म
 नु हीनं कियं हीनं
 रुक्मि हीनं न धेव च।
 जय ह्यंता च हीन नु
 नो यत्र भव्यं न॥ आ
 नो वीदा। उं अग्निमि
 ॥ उं यस्या कर्म॥ वदी
 रुक्मि वद्मो दिथ न
 ॥ उं सप्तर्षि नृणां॥
 रुक्मि र्या अग्नि युताय
 यत्॥ उं ~~सप्तर्षि~~ न नृणां
 (गृहिता नृणां भया अ
 ध्वं हि अयं दा अग्ने
 सि अयं भयं दिवः
 धीदा अग्ने सि वद्मोः

मधदि। अ० ग० उ० म० ग० न०
 उ० न० ग० म० अ० उ० म० ध० म०
 द० व० स० वि० अ० द० ध० पु० म० ध० द०
 वी० स० न० स० अ० द० ध० म० ध० म०
 धि० नो० द० वी० वा० ध० ली० यू० स्फ०
 न० सु० ओ० वि० र्यं० ग० नि० च० म०
 व्या० य० ता० वा० क० प्रा० ल० च० रु०
 ४० ग० गु० उ० ८० म० ब० ली० ॥ ३० ॥
 ग्रा० य० र्यं० ॥ गु० ग० गु० ली० रु०
 म० ना० ॥ अ० र्यं० प० ग्रा० द० क० ॥
 न० क० ली० वि० ज० म० ली० क० ला०
 ॥ ३० ॥ स० र्यं० स० र्यं० ग० क० ॥ अ० ॥
 ८० म० र्यं० क० ला० ॥ ३० ग० क० ॥
 ग० क० स० न० ८० रु० ॥ क० म० ॥
 स्व० ॥ ८० म० य० ह० म० ॥ अ० य०
 म० ॥ न्या० स० ॥ अ० वि० वि० स०
 र्यं० ॥ ३० ॥ उ० द० र्यं० त० म० स० ॥
 सा० दि० थ० य० ॥ ॥ का० क० व०
 लि० स० र्यं० न० वि० लु० थ० य० धु०
 न० दा० व० वि० स० र्यं० न० ॥ ८० म०
 वि० ८० य० द० ता० मि० स० मा० य० ॥
 त० ग० ४० म० र्यं० वि० य० क० वा० मा०
 म० त० म० नी० क० वा० या० र्यं० म०
 वा० म० थ० क० म० न० क० र्यं० न० ॥

॥ का० क० व० लि० द० न० ल० म० नु०
 ॥ द० वा० म० नु० व्या० य० स० वा० व०
 सी० ति० सि० द्वा० म० य० द्वा० न० ग०
 दे० व० र्यं० द्या० ४० थ० ता० वि० हा० वा०
 म० न० व० म० म० म० म० ॥ य० या०
 न० मि० क० नि० म० या० पु० द० रु०
 ॥ वि० यी० ठि० का० की० ठ० य० ठ०
 ग० का० या० व० रु० कि० ता० ४
 क० र्म० नि० व० त्थ० व० द्वा० ४० य०
 या० नु० न० रु० कि० मि० द० म०
 या० र्यं० न० व्या० म० द० न० म०
 दि० ता० रु० व० नु० ॥ २० ॥ अ० वा०
 न० मा० ता० न० यि० ता० न० व० न्धु०
 न० वा० न० सि० दि० न० त० ता०
 न० म० मि० ॥ न० रु० य० थ० ॥
 न० रु० वि० द० रु० म० न० त० न०
 वा० र्यं० नु० रु० कि० म० दि० ता०
 रु० व० नु० ॥ ३० ॥ व० रु० द० ८० म०
 रु० ग० ग० ८० म० य० न० य० न०
 गु० कि० ता० थ० रि० व० ल० रु० त०
 र्यं० द्या० ४० रु० य० र्थ० म० न०
 दि० म० या० वि० रु० रु० म० या०
 मि० द० न० म० दि० ता० रु० व०
 नु० ॥ ॥ व० लि० हा० म० व०

दिः॥दिः॥काकलि
 रुकमननि॥यिनुथय
 धूनदावककमनकन
 कावयन॥॥निकाक
 वलिद नलवाक॥वूक
 नथप्रयायमानथ
 न॥॥निपावप्रविष्णु॥अथ
 लफावनीयुति॥॥
 पुथमवप्रगवमाध
 न॥॥विधिवलिजामकृ
 त्वा॥लफावनीअग्नि
 यऊमानलियाविय
 ॥॥कललयारिनः
 न॥॥॥अतयान
 यामहामयाय॥पुः
 थमकललवर्णलिव
 खनूयल॥तत॥सुथा
 द्यादिआत्मयूजाने॥
 ततायदवादिविधि
 वदगिह्यायनारुपा
 टनानेकर्मविधाया
 मिनामकनलकृया

त॥॥॥नामथनम॥॥
 तेनावक्रापुलीतहाय
 न॥॥विधिवकललवर्ण
 ॥॥॥अथयदासाधन॥
 दृतादृति॥तिलादृति॥
 कललयुति॥॥॥संख्याः
 दृति॥॥यवगवयुति॥
 ॥॥॥ततायथाकर्मकृ
 योत॥॥लफावनीनिर्म
 कन॥॥यवामृतज्ञान॥
 यवगवज्ञान॥॥गितल
 नसाधयत॥॥॥॥॥
 लमतलायनेम॥॥॥॥
 क्रयल्लोनी॥॥॥॥॥
 व॥॥विद्यातलाय॥॥॥॥
 विज्ञाननाटमसि॥॥॥
 दि॥॥॥॥॥॥॥॥॥
 ॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥
 मूर्द्धि॥॥॥॥॥॥॥॥
 तत॥॥॥॥॥॥॥॥
 धर्यत॥॥॥॥॥॥॥॥
 नम॥॥॥॥॥॥॥॥
 थिवि॥॥॥॥॥॥॥॥

स्वाय २॥ ॐ अ वृ न न म
 न॥ गु ऋ ॥ ग ऊ रु स्वाय
 २॥ ॐ ग आ सि ॥ ना शी ॥ वा
 यू त स्वाय २॥ ॐ त व वा य
 ॥ हृ दि ॥ आ का ण त स्वाः
 य २॥ ॐ अ स्मा क मि ॥ अ
 ८॥ अ म ध्या ॥ ॥ त भा द
 व द ण कि या ॥ ॐ क गु
 ॥ अ य या ति ॥ थानि क
 लो ना ॥ ॐ ग ऊ अ स्मा ॥
 ग ऊ धा न ॥ ॐ स्व मि न
 ॥ ॐ न्द्रा ॥ यू ण व ली ॥ ॐ मा
 दि रु म्मा ॥ सी म न्ना नः
 य न ॥ ॐ प्रा ण य स्वा हा ॥
 आ ग क र्मा ॥ ॐ वृ ऋ रु न
 ॥ नि कु म ली ॥ ॐ का य स्वा
 हा ॥ ना म क न ली ॥ ॐ आ ८
 रु ल नी ॥ रु ल या ण ली ॥
 ॐ अ न्न य न ॥ अ न्न या ग
 ली ॥ ॐ मृ द्वा न दि वा ॥ वृः
 आ क न ली ॥ ॐ रु ड कः
 ॥ ॐ रि ८॥ क र्मा रु द ॥

मास १
 ॐ व त न दी का ॥ दी का
 व दान ॥ ॐ व र्ग क लू त
 ॥ व त व र्म न ॥ ॐ आ क र्मा
 ॥ स मा व र्म न ॥ ॐ ग्र म्म
 क ॥ वि वा हा ॥ ॐ का ण
 न ॥ अ म न आ गु ॥ ॥
 ने मा य थं द वा नू क म
 न जी व न्मा स ॥ मूल म
 र्म नो क रि ति ८॥ ॐ पू नाः
 कृ न स्य ॥ च न्द ना दि दः
 वा र्च ल ॥ द व या अ नू र
 य न स्वाय ॥ ॐ म ना रुः
 ति ॥ यु ति हा ॥ ॥ ८॥
 नि क यू रि क ॥ य व
 धा न्मा दि ॥ वी दि ॥ ॐ वी रु
 य ष्य म ॥ आ क रि ति १० ८
 ॥ दृ त दी य वृ ति का ॥
 ॐ ओ ८॥ नि ॥ ॐ अ यः
 वा र्च ॥ आ क रि ति ३॥ य रु
 ८॥ स्व मि ॥ ॥ द व द दि
 ल्मा दा न ॥ व लि द न ली
 ॥ र्म व या ण न ॥ ॥
 न त ८॥ य ल्मा क न य न
 आ र्म सा ॥ वि धि व यः

रू सं मायथं न ॥ न्यास ॥
 यजमानया नेयसूय
 वीतसर्वयग वाविय ॥
 कल ॥ हरि ॥ क ॥ ओं
 वाद ॥ ॥ साक्षी धय ॥
 अग्नि ॥ गम मय लिं गं न
 यो युवा रुथ ॥ ॐ ति न
 सुवती पुति क्ता ॥

ततः ॥ वि पद विधि लिखा
 त ॥ वसथ ॥ द्रयी र्वयगः
 वाक्चाय ॥ ॥ वृत्तिकाग्नि ॥
 वि ॥ धय वय रू याय ॥ न
 सुवती पुति क्ता ॥ विधि
 धर्म सयिगु ॥ अद्र याय ॥
 अथ मृतक ॥ अया यूजा
 याय ॥ कां वन पुतिमा
 मूर्त्तय ॥ दमा स नीदि
 अगुगन्धोर्न यूजयत ॥
 अथ वा नाद क ल्य त्मादि
 ॥ अमूक ॥ गम तु यथा उ
 द्गमा उ ॥ गयि ॥ सयि
 लु क न ॥ अद्र ॥ अथा
 यनि स्तापि त मृ ग कय
 त्रिवा स ॥ कु कं चू क

पुरि वि सर्वा लं का नर्म
 यू गी वि तान च्छु वाम
 न व्र ज न ना ना द्वा दः
 न सर्व वि वि ॥ धय स्क
 न ॥ स म गी पी ठिकाः
 नीदि कां ॥ अता मुधा तु
 नाना नूय वि स्ती र्त्त स
 की र्त्त या गु रू ली

स लिल कु सु जल या गु रु नि का
 दि व मु रि ४ सं यू गी र्थ
 दद य ॥ धय दी प न
 वं य रू लिला दि व मु
 सं यू गी ग न्ध च न्द न मि
 दू न क रू नी क यूर्त्त न ता
 मूल रु ल भा द क र्वा य
 ला ॥ अय स्क न ॥ धय वा च
 न ॥ अय ती गृ ह दः
 तु ॥ गम मदि य तु नं ग का
 गम दि सर्व गृ हा य स्क न
 ॥ अय ती रू ना रू ना न क
 त क ल्म ष यु ॥ धय नाः
 र्थ ॥ अ न क व र्ष ॥ न कां
 ठि स्व र्म ना अ रू ग म र्थ
 वृ क्ता क वि स्तू ला कः

शिव लोक सं प्राप्ता यः
 नीमृगकः शय्यां दौरेव
 यत्रि सं हि नाना ना (म
 गुपुवनः शखा श्यामग्न
 रुसा माधव लव दाध्या
 यि श्यावा कृ (ल श्याकति
 पय नाम कस्य ४ सु देवः
 क्ता चार्थः ४ सं पुदद ॥
 ॥ ॥ मउरिव दायक ॥
 पुं का दान ॥ इना हा य
 ० न ॥ शिवे दिय ॥ दकिः
 लो ॥ श्वा गु ॥ यथा कृ क
 सु ॥ य न ^(लघः को न स) सु न्या सा गु
^{मु ५ क} न जो मं शु । ॥ यथा ^{मु ५ क} मं व
^{मु ५ क} मं क न्मा नि त था उ न्म
 नि उ न्म नि ॥ अगु र्गंध
 दि ॥ वि स क्ते ॥ यित ॥
 ॥ ॥ (म ग म स पू जा ॥
 अरि ष क ॥ वा रा वः
 दाय क ॥ सा दि था य ॥
 ० ति मृ त कः श्या दान
 वि धि समा क ॥ ॥

अथ मृग दान ॥ अथ
 वा ना रु क ल्ये त्या दि ॥
 ० द म न्नं म या नी यं श
 को य स्म ने ल वं ऊ ना
 दि मृ दि त ह पि य य
 नं पु जा य ति दे व ती ख
 र्ज का म ना र्थ ना ना ५
 (म ग व क ल म र्वाः
 नी (म ग र्ज ४ सं पुदद
 ॥ ॥ का न यि त्या दृ रं
 नं म्मं दा न र्ति जु व नं
 मं । स च पा य वि नि म्म
 का वि ष नू प म वा पु
 या न ॥
 ० द या रु ल सा ॥ म पू ज
 गृ ह ० डि धू न क मो ल
 ॥ पि य कृ सा (गु थ कृ कृ व
 अ उ पा द न ॥ कृ थ कृ कृ
 न व ॥ पि य कृ कृ कृ न व ॥
 वृ था स्म र्म या य ॥
 न न मि य कृ सा (गु च गु
 दि ना (गु वा दि ना (गु वा ॥

यंचदहायिलुयुदानं॥
हाताऊंयंचदीनंचदि
नवृद्धिकनयुमात।स
यिलुकिनलीक्याम्भू
नीनीवचनंधुर्व॥गः
गाऊलकुसुसखा॥च
त्वात्रिंशत॥४०॥यंच
चत्वात्रिंशत॥४१॥
नकविंशति॥११॥स
क॥१॥यंच॥१॥वि॥
३॥नका॥१॥ॐतिमखा
॥अतुंथाकोनवृद्धि
न॥भलानयुय।साइड
भ॥कोसखनयसभ॥
यंभाचकंकाय॥तत॥४
यूऊनंकुय्याग॥अथा
दि॥अमूकगंगासूका
दहायंचदहामयिलुः
अऊंनिवायकुसुके
अनायउदककुसुपा
गायॐदमासुनउय
तिष्ठती॥११॥यु॥

पादाच॥यु॥दहा
द्य॥चन्दन॥यक्षावः
वीत॥यु॥ध्रुव॥५
दीय॥नेव॥य॥रुल
यु॥गामूलसंक
ल्यसिद्धि नमु॥अतु
गन्धादि॥ ॥मन
युजा॥अमूकगंगा
सूकादहायंचदहा
मयिलुअऊंअमूकय
गा॥ॐदमासुनउय
तिष्ठती॥११॥यु॥
द्यादिअतुगंधार्क॥स
गु॥नम॥कुसुकेअथना
य॥सर्वतीर्थमयीमूर्ति
कुसुकेअ॥४॥युतीयन।
नमामिसगततुल्यसर्व
जीवस्यगोनक॥विधिः
विष्णुर्देवत्येव।विमूर्ति
रवतानक।अथमन
कादिअकवर्णयुलमा
मिस॥दाहिर्व॥यथम
कलावर्णनउमासा

दि कथिनु कै। दि सफा हा
 नि. मूर्ति स्वर. पूजादि कु
 रु कथन ॥ अंग गन्धः
 दि ॥ ॥ वरु दंडा यिनु
 सनंद त्या ॥ अयादि ॥ अ
 मूक (गंगा मूका दंडा
 यंद दंडा कला यिनु
 ॥ यथ मकला यिनु अ
 मूक नाभ प्रत रु यिनु त
 स्म उयति ठती ॥ द्वितीय
 ॥ त्रितीय ॥ चतुर्थ ॥ यंद
 म ॥ अ ॥ स फ म ॥ अ ॥
 म ॥ त व म ॥ द ॥ म ॥ न का
 द ॥ द ॥ द ॥ उ न्मा सि
 कला ॥ अ म्म सि क ॥ रु रु
 पु कल न ॥ नुर्व कु भ न
 यिनु रा गी कृत्वा ॥ यथ म
 कला यिनु रा गी उयति ठ
 ती ॥ नुर्व तिला द क ॥ यज्ञ
 पवी गवा स ॥ चन्दन. पुष्पा
 धूप. दीप. नेव अ. रु लं
 द त्या ॥ अंग गन्धदि ॥ यथ

मकला यिनु पुष्पा उय
 ति ठती ॥ नुर्व दि गि नी य
 कला दी ना ॥ १४ ॥ ॥ यि
 नु म्म गि ॥ यंद दंडा कला
 अ ॥ यिनु दंडा रु पा न
 नी ॥ सर्व पाय विनि म्म क ॥
 शिव ला कं स ग क्ति ॥ अ
 न गन्धदि ॥ ॥ यून ॥ कु
 रु कथन ना दी ना वि स क
 ॥ ॥ पूर्व व न वा क ॥ स्व स्था
 न वा भा रु वे नु ॥ नुर्व यथ
 मकला दि यिनु नी स्व स्था
 न वा भा रु व नु ॥ ॥ यिनु
 उ ॥ अ उ था उ ॥ दा दा वः
 लं ख धाल न भा वा क न
 दू य क ॥ अ उ था लि वाः
 दि न त य कल स्था य ॥ अ
 म्म यिनु दू य क ॥ यथा दि
 त. य उ मा न भा उ दू य
 माल ॥ यथ अ उ था दू य
 विधि ॥ ॥ न न्म ॥ अ
 म्म को च वृ ध ॥ यत म्म क
 म्म लि ॥ नुर्व दि त न क ल वी
 मु चि यि उ वि ॥ अ व न ॥

१ ना जाय निमित्त दाव आ
 कार्य न भू भू क्रिय कू याय
 नून वा ये या स आ या न दू
 पा लिय पा ल द ध न मृत क
 थ दा व न न ॥ ॥ भाव का व लि
 हा व या व द वा ल स व लि न
 यिय यिल का चल कान
 गाल क गाल वा विया व द
 का य ॥ न लि यु वा द या दा
 न लि द क्ष क्रिया या च क ॥
 न का द क्ष ॥ गृह शु दि
 ॥ गृह या द न ॥ लया ॥ थ
 न लि ॥ यु थ म मा सिक ॥ न
 वं दि ती य ॥ र ती य ॥ च तु
 र्थ ॥ यं च म ॥ उ न मा सिक
 ॥ व ॥ स फ म ॥ गृह म
 न व म ॥ द क्ष म ॥ न का द
 क्ष ॥ उ न मा सिक ॥ यु थ म
 मा सिक ॥ ॥ द क्ष
 क्रिया क म न या त सा ख
 क्रिया न लि दानि क वि य
 ॥ दा कू कू या त मा दा नि
 क वि या न लि द क्ष क्रिया
 या न व न ॥ ॥ दानि क
 वि य वा क ॥ अ मू क थ न अ

क य र क थ म व मा सा
 दू य क न ल स म ता न
 ना डि म्मा या दी य म त वा
 य रि क ती ॥ ॥ डि कू कू
 कू व थि न द न नि स वि
 थि न ॥ अ उ था द न कू कू
 थि न द थि न डि य वा त
 या व ॥ नि ग हि ल नि था
 ल मा न ॥ ॥ न ल या
 कू कू रु हि दा व क्ष नि वा
 स म न न द य का का न ॥
 इ क व ल या रु का १२ न शु
 द ॥ का न ल क या ल या मा
 म कू गा र्थ ॥ यु मा द व शु द
 भा य द न व थ व न स व डि
 रु या न व लि त या व यू जा
 या न ॥ स रि कू कू कू कू न यु
 जा व डि न ॥

अ थ दा द क्ष दि व भ म क
 मा न न स व रु रु न यु न क्ष
 किं हा म क या त ॥ अ उ था
 नि या स या य ॥ कू उ न क
 ल क्ष या य ॥ थ म या क इ द
 स्वा शा स रु ल या य ॥ अ वा
 र्थ ४ क व ल व मू य नि ध न

कुम्भार्त्त॥ सुम्भोर्ध्व॥ अम्भा
 दियथावाक्क॥ न्यास॥ पू
 जर्त॥ ॐ नत्वायामीत्यादि
 दानार्त्त॥ ॐ दवस्यत्वा॥
 ॐ ह्याना दधि विभा॥ ॐ म
 हिमो दधि वीवन॥ ॐ पु
 तदि क्लृप्तवर्ग॥ ॐ श्रीं
 न॥ ॥ वलि पूजा दक्षिण
 दिशि॥ ॐ विष्णु तश्च कुरु
 न॥ ॥ पुतामि कृत्वा॥ ॐ य
 दवा दवदुत्त नत्वादि अ
 मि क्लाय नर्ता॥ अग्निना
 म॥ वलरुद्राग्रय स्यात्वा
 ॥ पूर्वो धार॥ उक्त नाद्या
 न॥ चक्रहोम॥ ओङ्कारिः
 गुधान गुधाना॥ यवहो
 म॥ ॐ गुता नमि लु॥ इवो
 होम॥ ॐ काकुत्॥ ताम्रत
 पत्रहोम॥ ॐ नमः ४ यन्त्रः
 यव॥ सर्वयहोम॥ ॐ ॐ
 मानूदाय॥ तिलहोम॥
 ॐ मानूदाय॥ वर्चहोम॥
 ॐ अम्भो वायव्य॥ ॐ नयूहा
 म॥ ॐ कया नम्येत्॥ बाला

किं लिख्यमप्यत्रोपायः ॥ अथा मागो नमस्तदपदः ॥ यथा ६ ॥ यत्र ॥ २

उहोम॥ ॐ विकि त्रिदुविता
 ॥ ॐ तल्लहोम॥ ॐ पुजा
 यत नत्वा॥ अथा मागो नमस्तदपदः ॥ यथा ६ ॥ यत्र ॥ २
 ॥ ॐ अथा द्यमय॥ समिधहो
 म॥ ॐ ॐ नोदवी॥ अम्भयगु
 होम॥ ॐ प्रागु यागु दगधः
 ना॥ वायस्यहोम॥ ॐ पुदि क्लृ
 स्तवर्ग॥ इदहोम॥ ॐ यय ४
 दधिर्वा॥ सुमं धिहोम॥ ॐ
 यम्वर्क॥ कृष्णयूष्यहोम॥
 ॐ कर्तुं कल्पन कर्तव्य॥ अ
 क्रहोम॥ ॐ द्युतं द्युतयाः
 वान ४॥ यवगव्यहोम॥
 गायत्री मन्त्रेण॥ सकर्ता
 गुधान धार॥ ॥ वलिः
 पूजा॥ क्लृप्ता धियतिष्ठतु
 ॥ कर्तुं वा लायनम ४॥ ॐ
 ह्युव ४ स्व ४ स्यात्वा॥ हाः
 ममन्तु॥ पुजा यतय ह्यु
 दिकृतय॥ ॐ पुता जय
 तानत्र॥ ॥ अन्तिक॥
 अमृक (गुता मूक नाम
 पुत अन्तिक नमः॥ ॐ श्रीं ४
 अन्तिक॥ पूष्टिके॥ ॐ यः
 स्वर्क यजामहे॥ ॥

किं नमस्कृत्य अत्रोपायः ॥ यथा ६ ॥ यत्र ॥ २

वीर्यो गच्छेत्तन्त्री मन्त्रेण ॥ यथा ६ ॥ यत्र ॥ २

तिरवना निविष्टा ॥ १०

२५३

रामसायनप्रवचन

[illegible][illegible]

उपनिष्ठतां॥ ॥ दक्षि
 ण॥ कश्चिह्नाकयु॥
 ॥ कगा॥ ॥ नास्वकायुः
 विय॥ लयतलायक॥
 नासिचक॥ धलिरुल
 कआदिनसकतादश
 कातश॥ ॥ अमूक
 गमगामूकादशयुध
 मकलागुकादशयिष्ठ
 ग्राह्ययथादाह्यमाना
 नसंकल्पसिद्धि नमुउ
 यनिष्ठतां॥ अगुगन्धा
 दि॥ ॥ दत्तसाकलाहा
 विय॥ ॥ धनलिरि
 ननिवक्काकावपूजाः
 गाय॥ अग्रादि० अमूक
 गमगामूकादशयुधम
 कलागुकादशयिष्ठगु
 दक्षिणकेशधनायलद
 मासुनउपनिष्ठतां॥ न
 वंयूष्य॥ यादार्घ्य॥ दूष्य
 रुक्माद्य॥ चन्दनयस्त्र
 पवीतयूष्यधूपदीप

अथसंयमगुपि

नेव॥ रुक्मयूष्यतामूल
 उपनिष्ठतां॥ स्तोत्र॥ रुक्म
 गमरुतनाथययवस्त
 नायगमध्वर॥ सिद्धकेश
 नमूर्तिस्तनमानुदसत
 यि॥ ॥ अगुगन्धादि॥ ॥
 तग॥ यिष्ठकर्मकश्रीता॥
 यिष्ठसुनउतिष्ठतां॥ वि
 लुकयु॥ अग्रादि० अमू
 कगमगामूकादशयुध
 मकलायिष्ठग्राह्यअमू
 कनामनकादशयिष्ठ
 रुमोउपनिष्ठतां॥ रुक्म
 युक्तालन॥ अमूकनाः
 न्नितिलादकउपनिष्ठ
 तां॥ नर्वचन्दनयस्त्र
 पवीतयूष्यधूपदीप
 रुक्मतामूल॥ वाक्॥ यि
 ष्ठावैलविधनसर्वयनि
 यूक्तममु॥ अगुगन्धादि
 ॥ ॥ सिद्धकेशनाययू
 ष्यउपनिष्ठतां॥ यिष्ठ
 यागुअक्षीयाहकिन

एकपटनविधकृष्णगानय

मु उ य नि ष्ट ना ॥ यि लु मु
 ति ॥ स म्पू र्ण सर्व रा ग्था ना
 सर्वो ग वि धि का न कि । न न
 यि लु न ति ष्ट ति । जिव ता
 कै म ग कृ ति ॥ ॥ यि लु वि
 स र्ज ण ॥ सि द्ध क ष्य न वि स
 र्ज ण ॥ यि लु ष्ठा य ॥ स रि व
 न ग र्ज ॥ ह म्प य द्वा ल न ॥
 म न य ल या द व न न या व
 ल र व न द्वा य क हा या क र
 ॥ ॥ र व र्ति म न या व यि
 ॥ र व र्ति म न या व यि
 ॥ ॥ जिव स द्द ल या
 व नि र्मा ल्य न द्वा न हा
 य ॥ ॐ य वि भु षा ॥ ॐ :
 वि म न्कु ल य ज मा न मे :
 रि वि व य न ॥ नि र्मा ल्य
 न क स र्व क द्वा ल
 य ॥ ल का म ग ल वा य ॥
 ॐ ति न का द ष म द्वा वि धि
 स मा य ॥ ति प ल य ॥

१ विरू सूकनु ॥ ॐ नमो
हृलनु गितय म ग्रथकव
वाहनवठ । कृष्ण चयाउपु
हृगो यच के गदननन ॥ यदा
विधयमवधि नमन ह्वाव
सानका ॥ विनु नूला वचत्वा
नि स्वस्ति नः सुयचक ॥
ॐ स्वतस्तिरू सूकनु ॥ अड
कालय ॥ अदि । यितनम
पुयककि तस्मै नार्क ह्वा
दिक ॥ ॐ ति विरू सूकनु अक
ख्या ॥ ६३ ॥ अथ ॥ उदीन
गो समानस्य उलक ह्वाक
मीनयन । विनु नूला वच
त्वा नि येनु सूकमिदं लघु
॥ या ० नन ॥ अक ख्या ॥ १७
॥ ॐ तिलघु विरू सूक ॥
श्रीरावरुवाध्वनमदा ॥
श्रीविष्णुनामस्तुते नमः
श्री ॐ अरनाजसासुगदया
रुग् श्रीवह्मविष्णुपरिराज
युक्तः ॥

[illegible]

पुष्पीनमः॥३॥ आरुपुण्यालयातः

ASHA ARCHIVES 3465

न स्वधाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 वत ॥ पितृयथनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 यादकनेष्टे ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 (म) ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 यथा ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 कथनावा ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 न ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥ नुर्वेदिनाम ॥
 नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥

मनीकुर्योत ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 नन्दिक ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 त ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 पूडनी ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 कुल ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 ववत ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 दीद ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥
 वत ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥ नमस्तु सर्वसिद्धिस्तव ॥

सु॥ भयि जा ता ॥ कुत्र कुत्र भुक्ता कृष्ण व द या न ग ॥ युक्ति गा दू न स क्षा नं सु
 र्य भव्या व सी द त ॥ ग्राह्य रु मां ग या क्षा त्वा क्षा त्वा द र्प ग दा ध र्प ॥ ता र्था र्थे व न
 म स्फा र्प ॥ य नु ग्राह्य व र्हे र्प ॥ ग यो ये न म ॥ ग दा ध र्प य ॥ य लु न्नी का द्वा य
 २ ॥ य वि नु कु क्षा द र्क ना र्क्ष्य द र्प ॥ जू प वि नु ॥ य वि नु वा सु र्वा व र्णा ग भा यि वा ॥
 य ॥ सु र्प त्प लु न्नी का र्क सु वा क्क्ष्य क न ॥ शु वि ॥ तुं न ना द वी ॥ वि क्ष्य द व वि ॥
 प र्क्षे ज ल दानं ॥ वि र्क्ष्य द व वि ॥ का ला य ॥ का ना य ॥ आ था क्ष व क्ष्य प्राप्ति
 ब्य ॥ धृति क्ष्ये वा मि ला न ल ॥ य लु ष क्ष्य प र्क्षे सु ॥ जू क्षो र व स व ॥ सु मा ॥ जू क

विष्णुप्रवहमुपवीदमान् ॥२

वसुधा ॥ अ० ओं कया ददि वृक्षस्य, वित्रु या कसु (ये वच)। दृत्रस्य वदूयस्य,
गाप्रवकस्य सुत्रस्य नः॥ सावित्री च यिना की च, ऊयन्मी वा यना किता॥ न
कादलोभं नृदास्य, कथितास्मि तु वनं स्य ना॥ नृका दष्टा नृद आ ॥ ॐ
द्रोधाता रुगः यूसा, मित्रोऽथ वनूल्मर्त्यो मा। अ० द्रुम विवस्वानसु विना, त्वः
व्याविष्मसु (ये वच)॥ ॐ त्वं न ददा द्रुम दि एण, कर्णे का द्रुम कर्मो लि॥ द्वा
दष्टमदि एण स्यः यूयं ॥ नृवमतिथि नदि कस्य नाचा अर्थः स्यः यूयं युदाः
नी॥ नभाय सुखा नयूय रुजनी॥ अ० द्यादि॥ बा र्क यूर्वे वत॥ कर्तुं ए क्रिया

दक्षका तदुवा ॥ न रुरुमित्रा क्लृप्ता नी सु स नि धन म म्मु ॥ वि र वि ता म रु पु
 यि ता म रु ना नी सु स नि धन म म्मु ॥ वि ष्य द वा दि यू र्व क यू र्व दा रू म ह क नि
 श्री हुं कू र्व ॥ न त ॥ स वी न म लु र्क र्मा न ॥ वि यु ॥ वि ष्य द व या गु र्मि न
 २ ॥ वै ष्य न न या गु र्मि न ॥ कृ ष्य द न न ॥ ये वि शो द क ना रू र्क ॥ अ य वि नु य
 वि श्र ति ॥ वि ष्य द व रा क्ता नी ॥ वै ष्य न न द व या ग्रा क्ता नी ॥ ये प वि नु र्मा ॥ या गु
 प वि नु नि धन य ॥ तुं ष्य न्ना द वी ॥ उ द क न पू र्ण ॥ तुं ॥ ष्य द य ॥ सु म व द न म्मा
 भ न सु रु ना रू ॥ य र्मो क्ता नु वा क्ता ल म्मु ॥ ना ज न या न सि ॥ अ द र्मा ॥ तुं ग

भ द्वा नी इ ना ध र्मा ॥ व न न ॥ गी ष्य त ॥ यू र्व ॥ तुं धू न सि ॥ धू य ॥ ग म न वा र्क यू
 र्व व न ॥ वि ष्य द व या गु र्मि न यू र्व ॥ वै ष्य न न द व या गु र्मि न यू र्व ॥ वि ष्य
 द व या गु र्मि न क्लृप्ता नि र्मि नु ॥ वै ष्य न न द व या गु र्मि न क्लृप्ता नि र्मि नु ॥ वि
 ष्य द य र्मो क्ता न न द व रा क्ता ल म्मु ॥ अ वा रु य ॥ तुं वि ष्य द
 वा सु आ ग त ॥ गृ ता म यि म ॥ रु र्व व र्दि नि र्मा द त ॥ य अ न नि र्मा
 उ प य वि र्मा अ न्नि डि का उ त वा द य न आ स या सि त्व न दि सि मा द
 य र्म ॥ आ ग क नु म र्मा ग म वि ष्य द वा म रु व ल ॥ अ न्नि डि ता ॥ अ म्मु
 सा व ध ना रू व न्नु र्मा ॥ तुं सु रु र्मा ॥ वि ष्य द व र्मो क्ता न न द व यू र्व ॥
 वि ष्य द वा ॥ गृ त म ॥ रु व र्मा

विष्णुधवपाशुक्तानी॥कुलनवालोउनी॥हुंआदिवाँआपःययसावहु
मो न निद्राप्रदकपागुयादित्रल्लवर्त्तमहिंयास्मानापःस्मा म० सोमा
स्त्राहसुधरुवतुन॥वाक्कलहसिकुर्णदद्यान्॥विष्णुधवयागुयविनुर्क
॥विष्णुधवयागुपुष्प्यर॥विष्णुधवरुस्त्रार्थःस्त्राह॥पुण्यर्था॥नर्वर्ध्वन
नधवयागुस्यापि॥हुंयवासियवयास्मधवाउवया नानी॥विष्णुधवर्वध्व
ननधवयागुसदन॥सदनप्रसि॥यानुडलनास्युर्दली॥यानुक्कनमसि॥
वत्तनयस्त्रायवीतपुष्प्यध्वदीयानुदत्वा॥अनुगम्भदि॥ॐदभाक्षगिब्य
ध्वतःस्त्रार्थोक्ताति॥अपसुधन॥भोटकतिलनामनी॥पितृजागुसर्नस्व

[illegible]

तस्यैव नमः ॥२॥

श्याकुत्रं गमयामस ॥ तस्याकुत्रं नात्रायत् ॥ तस्याकुत्रं वदितुं न गच्छामि
 ॥ तस्याकुत्रं यिषुयामुं ॥ ॐ त्वाहर्न ॥ स्फालीषु मधुदाययत् ॥ ॐ नययामा ॥
 मृगायममधुद्वयं न किमिधिव ॥ माध्वी न सुकोषधी मधुन कमुभोषमा
 मधुमत्याथिव ० न ऊमधुधो न सुन ॥ यितामधुमात्रावनस्येगिर्मधुमाहेनू
 मुहूयामाध्वी र्मवाहवन्नुन ॥ वन्यागुं दमासुन ॥ कनांगनाह ॥ ॐ
 तत्वायामि ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ स्वमन्मयि ॥ ॐ यदयक ॥ ॐ नक्राहर्न ॥ कुं
 नवकथन ॥ ॐ स्वजवि कदा ॥ ॐ यज्ञायवीर्य ॥ ॐ षष्ठी ॥ ॐ मधुवा

अथ च न्यायुद्धाय जायमिषु र्केय ३

ॐ दधिकाया॥१

[illegible][illegible]

ॐ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ ३

卷之六

एग॥ ॐ यमायीगि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 न॥ अ॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 मृगं अ॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 दमनं ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 वि॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 रुतना ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा

दास्यमागुं आति॥ कुं भव का ला॥ सवर्धन कुं भव का ला॥ वा क्य पूर्ववत्॥ ॐ
 वि॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 दास्यमागुं आति॥ कुं भव का ला॥ सवर्धन कुं भव का ला॥ वा क्य पूर्ववत्॥ ॐ
 मन्त्रं कल्पसिद्धि नमु॥ कुं भव का ला॥ सवर्धन कुं भव का ला॥ वा क्य पूर्ववत्॥ ॐ
 गि वि॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 अ॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ दयमायी गि न भे स्यादस्वध॥ ॐ यमा
 सिद्धि नमु सर्वविधिवि यूर्ध्वममुषा कसिद्धि नमु कालाती तव लोती गीत
 त्वर्ध्वं निर्दोषममु यस्यादि पू न स्य अक्षी यममु॥ वा क्य लन॥ अ॥ ॐ दय

[illegible]

उपसिष्ठतां॥विध्यदवयिषुसुनंनमः॥यथावाक्क॥यितुयिषुसुनंस्वधा॥
यिषुकागसुनंनव॥विकलविषुकुत्वा॥कृष्णकननविध्यदर्व॥उदधिरुर्क॥मित
नयितुपर्व॥उतिलरुर्क॥॥हुंअजुमिष्वालाप्रजुनमिष्वालामधुदि॥व॥स्वध
यामादयर्क॥भश्य॥स्वनाउसुनीतिभनीयथावसुकन्वकलयाति॥जुजातदनाः
व्ययवाला॥अवगर्भुविनाहिताः॥गर्भयिषुमयादलं॥सदीयमूयतिष्ठतां॥
संस्क्रान्दीनवालविकलेसुनगतियिषुमूयतिष्ठतां॥नर्वपूर्व्य॥मिलोदकार्य॥
चन्दन॥पूर्व्य॥रुलरुजर्नधूपदीपा॥दिर्कंदद्यात्॥ॐ॥रुलमूवगामूलधूप
दीपनेवद्यादिसंकल्पसिद्धिप्रभुउपतिष्ठतां॥विकलेदानयथाकरुलसंयाक
ममूविकलेला॥सु॥एकारुवन्तु॥अग्निदग्धस्थयजीवा॥अयादग्धकलेमम॥

सुभोदकं नरुयानु, एकाग्रानुयनी गति॥ यजमानरुभोपुङ्गात्यावम्यउग्रम्यर्ज
 नेक्यार्ज॥ पुंविष्णु३॥ गमयन्तीत्यासु॥ अन्नजम्बुकभगमलि, दोनीपुर्व्येकिल्ल
 धा। दधिप्रक्षितिर्प्राकप्रक्षीगयिषुर्पूरुर्व॥ यिषुयार्गुगृहीत्वापूवोरिस्थाः
 गमयन्तीत्यत॥ ३॥ यिषुनर्पयादयामि॥ सर्पादयस्व॥ अयसुर्वीनदक्षिणहि
 म्रख॥ सर्पवर्न॥ सुर्पवर्न॥ एकासु॥ एकासु॥ एकासु॥ एकासु॥ एकासु॥ एकासु॥
 एन॥ ए॥
 लसाधय॥ गिरुगीकृत्वा॥ यिषुमर्दकत्रिष॥ पुंकुनेष्व॥ पुंकुवसुदक्तानुः
 बर्दमन॥ सुदसूपयामगृहीतासीत्यायत्ताइर्षगृह्णाभ्यवगन्थानिनि

न्यायत्वाद्भूतमर्मा॥यथागमगुवाक्की॥यित्वायथाप्रभासहासोत्पन्नतद्वि
 भूतमस्त्वेषा॥नखवसेव॥पृथ्वालिस्त्रिधर्मा॥त्रिधर्मास्तुतसुदंशप्रस
 दम्पयामगृहीतासीत्यादौकं॥त्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मा
 ॥यिनामर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मा
 ददिविस्त्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मा
 त्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मास्तुत्रिधर्मा
 ॥इतिविष्णुमातृमा॥यिर्विष्णुमातृमा॥यिर्विष्णुमातृमा॥यिर्विष्णुमातृमा॥
 ती॥यथायथावन्धवास्तुमा॥यथायथावन्धवास्तुमा॥यथायथावन्धवास्तुमा॥

लोपगताथव. जाल्यैधर्षगवस्तुध॥वित्रयाश्रमगर्होध्य. स्नातास्नाताकुलमम।
 भर्षायिनुमयादर्हं. ज्कीयम्पमिठनी॥नर्वप्य॥विनुराग॥३॥ॐजुगयितभा
 मादयधंयथरागमावृषायध्वं।जमीमदक्तयितआयभरागमावृषाययित
 ॐजुस्ववस्तुश्रुप्यंनमः॥नकादगन्तुश्रु॥दादगमदिशे श्रु॥पृष्यंनमः॥स्व
 धा॥८गमनुवाक्पूर्ववत्॥यिरयथनामश्रुम॥गमर्मे८८यिनुतिलादकार्यस्वधर्
 ॐ॥नभावयितनान्नायनभावयितन॥८८गमसायनभावयितभाजीवोयन
 भाव॥यितन॥स्वधयेनभावयितभायायनभावयितभासमन्यनभाव॥
 यितन॥यितनानभावगृह॥न॥यितन॥दलेसभाव॥यितन॥ध॥भीतद॥पि

नानाकास॥यिर॥३यिनुवासस्वध॥नर्वचन्दनस्वध॥पृष्यंनमः॥यस्नापवीत॥
 र्यपकीर्णगनाकानिनानाय्यानिमालिका॥गृह्णन्नुयितन॥८८धव. धिबलाक
 महीयन॥तुलशीगतपगुश्रु. र्गनाडीचर्चयर्क।तकर्नमान्नर्तयेव. पि
 हर्षदलेमद्वय॥नर्वयिर. य॥रुतुलाजनध्वयदीपनदत्ता॥ॐदंरुले
 पृष्यताम्बूललादि॥मनुर्त्तकानथत्॥ॐमध्ववाता॥दरुतिर्लेगृहीत्वा॥
 श्रुयादि॥वाक्पूर्ववत्॥यिनुदानात्रैगयिनुपुदानय८धक८रुलेस॥क
 मस्तुगय॥पृष्कनमाहृदयिनुपुदानय८धक८रुलेस॥पुमाकमस्तुकाल

नादेवाः सवस्त्रिभुताः ॥ रथनरेणातजसादगिरिनेवयोदधुः ॥ १ ॥ ग्रीष्मोराः ॥ ३ ॥

गीतवलातीतनिर्दोषममु, दाता नशो कान भ्रष्टि दुममु क्रियाय निपु
 र्मममु, यस्यादि छै गस्यज्जी ममु सुध ॥ ३ ॥ द व स वि त ॥ यिषु दाना हु
 नवि (क्षो) अगुग भ्वादि ॥ सुखी तावन दारु वनु ॥ ३ ॥ सुपा द न ममु ॥ दी र्यो मा
 य न मु, निवा अ प ४ सं तु ॥ ३ ॥ दी र्यो य न्ने दाय न अ न्ध वि भू मी निय द
 तिव ॥ नु ० व वा य ४ पु सि व न्ना, दी र्यो मा य न या न्न या ॥ अ र्या म ध्वा रि ता द
 वा ४ सं व म्म पु ति छि ता ॥ वा क्क ल स क न्ना र्छे नि वा आ या रु र्व कु र्ग ॥
 निवा अ यं सं तु ॥ ऊ लै द द ग्वा क्क ल स रु र्छ ॥ य्थ वृ त्त रु र्छी, रु र्छी
 र्व सु ति य्छ न्ना ॥ रु र्छी र्व सु र्छ रु द्वा (ग म छ, सो न न र्छी व ऊ य न्ना ॥ अ रु र्छी र्व वा

मु म य्छ, भ्रम नि व न मु ग्ग रु म म ॥ रु र्वे नि प्पु ल म न्ने, रु र्वे भ्रम नि क न्ने लु
 र्छ ॥ य य कु य रु र्छ न्ना क, ग रु द मु रु द्वा म म ॥ वा क्क ल रु र्छी य्छी र्छी ॥
 वि (य्थ वी द का नो र्वे भ्रम न न द वा नो द रु म न्ने रु द क म दी य म मु ॥ न र्व यि
 ग्वा दी नी ॥ रु र्छ (ध ति वि (य म ॥ अ रु नि वि न्ने क रु द्वा वा य्छो ल म यि ॥ य्थ वी
 रु र्छी रु र्छी म न्ने रु द क म दी य म मु ॥ अ रु द्वा ना ४ यि रु ३ ४ सं तु ॥ अ रु म
 रु र्छी रु र्छी म न्ने रु द क म दी य म मु ॥ अ रु द्वा ना ४ यि रु ३ ४ सं तु ॥ अ रु म
 रु र्छी रु र्छी म न्ने रु द क म दी य म मु ॥ अ रु द्वा ना ४ यि रु ३ ४ सं तु ॥ अ रु म

॥ ३ ॥

॥ अङ्गावनामीवगमददयैवनामुभे । अर्त्तवभावदुरुवदसिधियल
 मही । याविगानेव्यनःसीतुमावयाविष्मकंवन ॥ नगानवालिषःसत्याःसीतु
 द्विपदवनुष्यदानांभक्तिरुवनुयुष्टिरुवनु ॥ स्वधीवाययिषा ॥ वाच्यता ॥
 यितुयिषुस्वधवाता ॥ ३ ॥ यीयतीतस्यःस्वधाम्मुस्वधा ॥ ३ ॥ अर्धकृपित
 मागर्ककुमारीयुक्कनमुडी । यथरुपुन्यासने ॥ ३ ॥ उडुडुवदनीनमुनी
 दृतीययःकीलार्त्तयनिशुती । स्वधरुतय्येतभयितुन ॥ दस्मादकादि
 कंदय ॥ अर्दीयैरुकिनमुस्वधा ॥ ३ ॥ यानुअधमूर्खकुत्वा । अर्खकुलीया
 भात्तान ॥ यथगुद्रादक्षिभादान ॥ स्वस्तिरुवन्नाकुतीस्वस्ति ॥ यितु ३ ॥

दीयैरुकिनमुस्वधा ॥ अग्निप्रगमविःस्थदववेस्थननदवानांस्वस्ति कु
 भाकुतीस्वस्ति ॥ ॥ ततो गवावर्द्धी ॥ कयिलदिर्षवगममाएत्यण्डमासुन २
 मूर्ध्नी ॥ नर्वबुक्काःदि । वहिद्वानां गल । गलयतिव ॥ दस्मादो । वदन । यल
 यवीत । युष्म । धूप । दीय । रुत । नैव द्यादिदत्ता ॥ ऊयस्मानु ॥ मण्डुर्लकुत्वा
 ॥ गवनमस्तु ॥ वन्दितासिवल्लिखन । विष्ममिभुलजङ्गना । कपितुनभया
 य । ऊन्मयाइःकुर्गकी ॥ गमवागुभानित्य । गमवः ॥ दृष्टुददिभ ॥ गमः
 वाभददययायि । गवीम । अधवर्षीम्यदी ॥ शोत्ररुयिजगत्मात । धेवा नाममृत
 युद ॥ गृह्णातुमिदं गम । ण्णयितुर्वेवददिभ ॥ ॥ अमृगमथनात्यन । शोत्ररी

नोनादेकः ॥ पञ्चदशोक्तता ॥ वृहतायशोसावल्लः ॥ विरिदेवयोदधुः ॥ ३ ॥

लोका कक्षा त्रिणां हृदं गमसुं गृह्णातुं हृदं भवतु मूर्तुमं ॥ अथ हृदं हृदं नंद हृदं
 ग्रीध हृदं ये वदन्त यशुयुद्धि ग्रीध हृदं ॥ अथ हृदं हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥
 हृदं ग्रीध सर्वो र्थसाधकः ॥ अथ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ ग्रीध
 नं ग्रीध यमि ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ ग्रीध नं ग्रीध मूर्तुमं ॥ ग्रीध
 नायकः ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥
 हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥
 हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥
 हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥ हृदं ग्रीध मूर्तुमं ॥

स्य कर्त्तुं त्वं शक्ता यय न भक्ष्य न ॥ ॥ अरिषक ॥ यदि कृषि मरुता गम
 सर्वे तीर्थ वक्ता गमदिना वा क्लेश कर्त्तव्य सन् भायं नि न सिद्ध यो ता ॥ ॐ स्वः
 स्ति न ॥ ॐ यद द्य क ॥ ॐ त्वय वि स्तुता ॥ अशी वो द ॥ अयं सर्वे वि यत्न मः
 मु सुखं अथामु अग्य का म व सुधा न व कीर्त्ति न मु ॥ अ न मु धर्मो म ति न मु
 वि यु क्त्वा मु सन्मान वृद्धि म मा वां कि न सिद्धि न मु ॥ सिद्धि न मु क्रिया न मु
 वृद्धि न मु धना य वि ॥ पुष्टि न मु अनी प्र ष्ण भक्ति न मु गृह त व ॥ सर्व विः
 द्य यु अ सम न सर्व भक्ति क र्त्तु र्हे ॥ अयं यं व का म र्त्त व, तन्नी सन्मान वद

वर्षाभिर्त्रितुनादित्यास्तोमसपूदशेतुनाः॥वैरूपेणविशौजसाहविरिन्देवयोद

पितृनामातृनावासाभाभा ॥ अमृतं तर्पे न गम्या ॥ अयं युजो धर्मविद्या स्वर्ग
भाद्रसुखानिव। पुण्यं कुरु तथानाकं नृणां वैवयिनामला ॥ अयं वृद्धिर्मा
॥ अमृतं वृद्धिर्मा सुखनिय ॥ धर्मसुकातवृद्धिमुत्तुर्गसकवृद्धय ॥ वि
तन ३ सुयीतममु ॥ नवविश्वदवादिजाकार्योर्न ॥ गुरुलक्ष्मीपुष्पनम ॥ कृतक
म ॥ असाक्षि ॥ लक्ष्मीसुय्योयपुष्पनम ॥ पिनु नद्यां वृवा रुथत् ॥ स्वर्गगर्ग शरु
यित्वा ॥ ॥ नृतिवाकलस्योकाकलद्विविधः समाक ॥

ततश्चिपकविधिः ॥ वसुध ॥ यं वगवाक्याय ॥ न कुवनीयुति का ॥ अतया
नयासुयरूपाय ॥ ॥ विश्वदवयरूपाय ॥ ॥ विधिर्धर्मविधीथय ॥ प्र

तयिष्ठयाशुर्ग ॥ पुनर्त्वेयुगर्सीयुर्कं पुनर्त्वेयुगर्ग ॥ यितामरुपुसा
दतं विष्णुलोकं सुगच्छति ॥ यितामरुक्यात् ॥ सुमानक्षायवाक् ॥ अथ
वा नारुकर्य ॥ प्रासुपकतिथिनाम्बुजावर्ण ॥ नवधानुगत ॥ पुनः यितनस्तु
ददामिव ॥ जिवमस्तु विश्वार्ण ॥ जायर्गीयितनी ॥ गृह्णर्गीत्तुत्तुभा
त्यन्तं यिष्ठुत्तुयलर्गस्तिर्ग ॥ सुमानपदवीजास्तु ॥ सुसीदतु यितामरु ॥ गच्छ
रमरापुनः यिष्ठुत्तुलक्ष्मी ॥ सुमानपदमात्रस्य ॥ यितुल्लोकस्तिनारु
व ॥ ॥ नृदलोकं यति एकागमासियनर्मागति ॥ पुनर्त्वेयुगर्गलोकं यति एका
दिवालोर्गसगच्छतु ॥ ॥ पुंयसुमाना ॥ सुमनस ॥ यितनायमना ॥ अर्गर्गर्ग

करीः सहोद्विरिन्द्वयोर्धुः ॥५॥

[illegible]

श्रीशिवेणामनुनादेवास्त्रयस्त्रिंशो मृतास्तुताः ॥ सत्येनरेवतीः सन० ६० ६॥ ६॥

सयूनर्क॥थरधूनकावयिनुरागगाय॥यिर३विप्रिथी॥ ॥धर्नसिग्म
गमसयूजासयासु॥कुगाकानउदककुमुदान॥धर्नसिग्मगमसयूजावि
प्रिथी॥स्नानययर्नधूनकावसस्विप्तावकसितनिम्मेकनादिप्रगुनवम्
विय॥जानीबोदान॥थरगिपदविप्रिथी॥ ॥वृद्धिग्मद्रस॥कतय

विद्य॥ अनीर्षो दानं॥ धरति पद्मविमिश्रता॥
नमः॥ द... नमः॥ का ला य न मः॥ का न्मा य न मः॥ अ प
न य न... २॥ लो च ना ज २॥ मी र्थं ग्म कृ स॥ य न वा य २॥ प्रा तु वा य २॥
ता... मृ श्व श्वा न मः॥ व सु श्वा न मः॥ ॥ ष षु षु व द॥ ३॥

वसः
वावसुवसि वृतासुता ॥ तथक्त नलधवाह विविद्वथा